

स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्तीय शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का तुलनात्मक एक अध्ययन

¹Swati Gaur

²Supervisor Prof. Dinesh Pandey

Subject Education, Institute of Education and Research Faculty of Humanities Mangalayatan University, Beswan, Aligarh

सारांश, प्रस्तुत शोध विषय – “स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त शिक्षा सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का समालोचनात्मक अध्ययन” – का चयन कई कारणों से प्रासंगिक और औचित्यपूर्ण है। सबसे पहले, भारतीय शिक्षा दर्शन और समकालीन शिक्षा नीति के बीच संबंध की खोज अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं है, बल्कि नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास भी है (Sharma 2018)। आज की शिक्षा व्यवस्था में तकनीकी विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के कारण मूल्य-आधारित दृष्टि कहीं न कहीं उपेक्षित हो रही है। इस संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द का नव्य वेदान्त शिक्षा सिद्धांत शिक्षा को “चरित्र निर्माण” और “मनुष्य निर्माण” का साधन मानता है (Vivekananda 2017)। अतः यह शोध भारतीय शिक्षा नीति को दार्शनिक दृष्टिकोण से परखने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। दूसरे, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक ऐतिहासिक परिवर्तन का संकेत है। यह नीति शिक्षा को समग्र (holistic), बहुविषयक (multidisciplinary), और कौशल-आधारित (skill&based) बनाने पर बल देती है। इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा, नैतिक मूल्यों और मातृभाषा के संरक्षण का भी उल्लेख है (Ministry of Education, 2020)। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि क्या यह नीति वास्तव में विवेकानन्दीय शिक्षा दृष्टिकोण के आदर्शों – जैसे आत्मनिर्भरता, आत्मबल, मूल्य शिक्षा और समाज सेवा – से सामंजस्य रखती है? इसी प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ना इस शोध का औचित्य है।

मुख्य शब्द, मनुष्य निर्माण, बहुविषयक, कौशल-आधारित, व्यावसायीकरण आदि।

परिचय, वर्तमान समय की शैक्षिक और सामाजिक चुनौतियाँ इस शोध की प्रासंगिकता को और बढ़ा देती हैं। आज की शिक्षा प्रणाली में व्यावसायीकरण, प्रतिस्पर्धा, बेरोजगारी और मूल्यहीनता जैसी समस्याएँ गहराती जा रही हैं (Pathak 2015)। विद्यार्थी ज्ञान तो अर्जित कर रहे हैं, लेकिन उनमें आत्मबल, सेवा भावना और नैतिक चेतना का अभाव देखा जाता है। विवेकानन्द का मानना था कि शिक्षा का मुख्य लक्ष्य आत्मविश्वास और आत्मबल को जाग्रत करना है (Bhuyan 2016)। इस दृष्टि से एनईपी 2020 और विवेकानन्दीय शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन व्यावहारिक और सामाजिक समाधान प्रदान कर सकता है। भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा नीति का समन्वय है। एनईपी 2020 में भारतीय भाषाओं, संस्कृति और परंपराओं को पाठ्यक्रम में शामिल करने की बात की गई है। यह विवेकानन्दीय विचार “भारतीयता” और “आत्मनिर्भरता” की ओर संकेत करता है। अतः यह शोध भारतीय शिक्षा व्यवस्था में परंपरा और आधुनिकता के बीच सेतु का कार्य करेगा।

इस शोध पत्र का चयन भविष्य की शिक्षा नीतियों और व्यावहारिक सुधारों के लिए भी उपयोगी है। यदि विवेकानन्दीय शिक्षा दर्शन और एनईपी 2020 के सामंजस्य एवं विरोधाभासों को पहचाना जाए, तो शिक्षा नीति-निर्माताओं, शिक्षकों और समाज को दिशा मिल सकती है। इस प्रकार यह शोध केवल सैद्धांतिक महत्व का नहीं है, बल्कि शिक्षा व्यवस्था के व्यावहारिक सुधार में भी योगदान देगा।

इस प्रकार, विषय के चयन का औचित्य इस तथ्य में निहित है कि यह शोध भारतीय शिक्षा दर्शन और आधुनिक शिक्षा नीति के मध्य एक सेतु का कार्य करेगा। यह न केवल शिक्षा के उद्देश्यों और स्वरूप को स्पष्ट करेगा, बल्कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की समस्याओं के समाधान हेतु भी मार्गदर्शन प्रदान करेगा। किसी भी शोध की प्रासंगिकता इस तथ्य पर निर्भर करती है कि वह वर्तमान समाज, शिक्षा और मानवीय जीवन की चुनौतियों का समाधान किस प्रकार प्रस्तुत करता

है। प्रस्तुत शोध विषय “स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त शिक्षा सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का समालोचनात्मक अध्ययन” आज के समय में अनेक कारणों से अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी है।

मूल्य-शिक्षा और नैतिक संकट का समाधान

आज की शिक्षा व्यवस्था में सबसे बड़ी चुनौती नैतिक मूल्यों और चरित्र निर्माण की कमी है। शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना या तकनीकी दक्षता विकसित करना नहीं होना चाहिए, बल्कि यह मनुष्य को अच्छे नागरिक और जिम्मेदार सामाजिक प्राणी बनाने का भी साधन होना चाहिए (Sharma 2018)। आधुनिक समाज में भ्रष्टाचार, हिंसा, स्वार्थ और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं। इस संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द का यह विचार अत्यंत प्रासंगिक है कि “शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के भीतर निहित पूर्णता को प्रकट करना है” (Vivekananda 2017 Vol- 4)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी “मूल्य-आधारित शिक्षा” और “भारतीय संस्कृति का संरक्षण” विशेष रूप से उल्लिखित है (Ministry of Education 2020)। इस प्रकार, विवेकानन्दीय दृष्टिकोण और एनईपी 2020 दोनों मूल्य शिक्षा को शिक्षा का केंद्र मानते हैं। आज जब शिक्षा का व्यावसायीकरण और मूल्यहीनता एक बड़ी चुनौती है, तब यह शोध इन दोनों दृष्टिकोणों के समन्वय से मूल्य-आधारित शिक्षा को नई दिशा प्रदान कर सकता है।

रोजगार और कौशल विकास की चुनौतियाँ

21वीं सदी की सबसे बड़ी शैक्षिक चुनौती है, रोजगार और कौशल विकास। बेरोजगारी, शिक्षा की अप्रासंगिकता और कौशल की कमी युवाओं में निराशा और तनाव का कारण बन रही है। एनईपी 2020 इस चुनौती का समाधान प्रस्तुत करते हुए कौशल-आधारित और बहुविषयक शिक्षा पर बल देती है। इसमें व्यावसायिक शिक्षा, उद्यमिता और डिजिटल कौशलों को शिक्षा का अंग बनाया गया है (Ministry of Education 2020)।

स्वामी विवेकानन्द ने भी शिक्षा को “जीवनोपयोगी” बनाने की आवश्यकता पर बल दिया था। उनके अनुसार शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित न रहकर व्यावहारिक जीवन में उपयोगी होनी चाहिए। उन्होंने युवाओं को आत्मनिर्भरता और कार्यकुशलता का संदेश दिया (Bhuyan 2016)। आज के समय में जब रोजगार और कौशल की समस्या बढ़ रही है, विवेकानन्दीय शिक्षा दर्शन और एनईपी 2020 का यह सम्मिलित दृष्टिकोण शिक्षा को अधिक व्यावहारिक और प्रासंगिक बना सकता है।

आज की शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों पर शैक्षणिक दबाव और प्रतिस्पर्धा इतनी बढ़ गई है कि मानसिक स्वास्थ्य संकट एक गंभीर समस्या बन गई है। आत्महत्या की बढ़ती घटनाएँ, अवसाद और तनाव इसका प्रमाण हैं। इस संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द के विचार दृ आत्मबल, आत्मविश्वास और ध्यान-योग दृ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उनके अनुसार शिक्षा का कार्य मनुष्य के भीतर शक्ति और आत्मविश्वास उत्पन्न करना है (Vivekananda 2017)।

एनईपी 2020 भी मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण को महत्व देती है। इसमें जीवन-कौशल, सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (socio&emotional learning) और विद्यार्थियों की भलाई पर बल दिया गया है (Ministry of Education 2020)। इस दृष्टि से यह शोध शिक्षा को मानसिक स्वास्थ्य और तनाव प्रबंधन से जोड़ते हुए व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत कर सकता है।

शिक्षा का एक और समकालीन मुद्दा है, भारतीयता और वैश्वीकरण का संतुलन। एक ओर शिक्षा को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप बनाना है, वहीं दूसरी ओर भारतीय संस्कृति, भाषाओं और परंपराओं का संरक्षण भी आवश्यक है। विवेकानन्द ने भारतीय ज्ञान परंपरा को विश्व में प्रसारित करने का संदेश दिया और “वसुधैव कुटुम्बकम्” की भावना पर बल दिया (Sharma 2018)।

एनईपी 2020 भी इस दिशा में महत्वपूर्ण है। इसमें मातृभाषा में शिक्षा, भारतीय ज्ञान प्रणाली, योग और आयुर्वेद जैसी परंपराओं को शिक्षा में शामिल करने की बात कही गई है (Ministry of Education, 2020)। यह शोध इन दोनों दृष्टिकोणों को मिलाकर शिक्षा में भारतीयता और वैश्विकता के संतुलन की संभावना खोजता है।

आज की शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। लेकिन शिक्षक शिक्षा और प्रशिक्षण की गुणवत्ता चिंताजनक है। विवेकानन्द ने शिक्षक को “प्रेरक” और “आदर्श” माना है, जिसका कर्तव्य है विद्यार्थियों में आत्मबल और चरित्र का विकास करना (Vivekananda, 2017)। एनईपी 2020 भी शिक्षक शिक्षा में सुधार के लिए चार वर्षीय समेकित बी.एड. कार्यक्रम, सतत व्यावसायिक विकास और शिक्षक की गुणवत्ता पर बल देती है (Ministry of Education] 2020)। यह शोध इन दोनों दृष्टिकोणों के माध्यम से शिक्षक की भूमिका को नई दिशा प्रदान कर सकता है।

आज जब भारत “ज्ञान-आधारित समाज” बनने की दिशा में अग्रसर है, तब शिक्षा का राष्ट्रनिर्माण में योगदान और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। विवेकानन्द ने स्पष्ट कहा था कि “युवाओं को जागो और राष्ट्रनिर्माण के कार्य में लगे” (Bhuyan, 2016)। उनके अनुसार शिक्षा का अंतिम लक्ष्य है – “मनुष्य निर्माण और राष्ट्र निर्माण”। एनईपी 2020 का भी उद्देश्य भारत को “वैश्विक ज्ञान महाशक्ति” बनाना है। यह नीति शिक्षा को सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) और राष्ट्रीय प्रगति से जोड़ती है (Ministry of Education, 2020)। इस प्रकार यह शोध शिक्षा को राष्ट्रनिर्माण और वैश्विक नेतृत्व दोनों से जोड़ते हुए इसकी प्रासंगिकता को स्पष्ट करता है। समग्र रूप से देखें तो यह शोध आज के समय में इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह शिक्षा के समकालीन संकटों – मूल्यहीनता, बेरोजगारी, मानसिक स्वास्थ्य संकट, सांस्कृतिक असंतुलन और शिक्षक शिक्षा की कमजोरियों – का समाधान प्रस्तुत करता है। स्वामी विवेकानन्द का नव्य वेदान्त शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, दोनों ही शिक्षा को मूल्यपरक, समग्र और जीवनोपयोगी बनाने की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं। अतः यह शोध न केवल अकादमिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि समाज, राष्ट्र और शिक्षा व्यवस्था के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य भारतीय शिक्षा परंपरा का इतिहास अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण रहा है, प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक शिक्षा का स्वरूप, उद्देश्य और पद्धतियाँ निरंतर बदलती रही हैं, किंतु उसका मूल लक्ष्य सदैव “संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास” और “मानव कल्याण” रहा है।

प्राचीन काल में शिक्षा का केंद्र गुरुकुल थे, जहाँ गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित शिक्षा दी जाती थी। वेदों, उपनिषदों और स्मृतियों में शिक्षा का उद्देश्य आत्मज्ञान, नैतिकता, अनुशासन और समाज सेवा माना गया। उस समय शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित न होकर शारीरिक, आध्यात्मिक और व्यावहारिक जीवन का संतुलित निर्माण करती थी। आचार्य शंकराचार्य और बाद में रामानुजाचार्य ने वेदान्त के दार्शनिक आयामों को आगे बढ़ाया। बौद्धकालीन शिक्षा ने भी भारतीय शिक्षा को नई दिशा दी। इस काल में नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय स्थापित हुए, जहाँ तर्कशास्त्र, चिकित्सा, गणित और धर्मशास्त्र की शिक्षा दी जाती थी। बौद्ध शिक्षा ने करुणा, अहिंसा और अनुशासन को महत्व दिया, जिससे शिक्षा का सामाजिक और नैतिक स्वरूप और मजबूत हुआ। मध्यकालीन शिक्षा का स्वरूप मुख्यतः धार्मिक और व्यावसायिक रहा। मदरसों और मकतबों में धार्मिक ग्रंथों की शिक्षा दी जाती थी। इस काल में शिक्षा का दायरा सीमित होकर कुछ वर्गों तक ही सिमट गया। यद्यपि इस समय कला, स्थापत्य और साहित्य के विकास ने शिक्षा को सांस्कृतिक समृद्धि प्रदान की।

आधुनिक काल में अंग्रेजी शासन ने भारतीय शिक्षा पर गहरा प्रभाव डाला। मैकाले की शिक्षा नीति (1835) ने शिक्षा को पश्चिमी ढाँचे में ढालने का प्रयास किया, जिससे अंग्रेजी भाषा और पाश्चात्य विज्ञान का प्रसार हुआ। यद्यपि इसने आधुनिक ज्ञान और विज्ञान की ओर भारतीयों का मार्ग प्रशस्त किया, परंतु इसके कारण भारतीय शिक्षा से मूल्य और आत्मा कहीं न कहीं उपेक्षित हो गई। इसी समय राजा राममोहन राय, महात्मा गांधी और स्वामी विवेकानन्द जैसे नेताओं ने भारतीय शिक्षा में सुधार और मौलिकता की आवश्यकता पर बल दिया। विशेषकर विवेकानन्द ने शिक्षा को “चरित्र निर्माण” और “मनुष्य निर्माण” का साधन माना, जो नव्य वेदान्त दर्शन पर आधारित था।

स्वतंत्रता के बाद शिक्षा नीतियों का निर्माण हुआ – 1968 और 1986 की नीतियों ने शिक्षा को लोकतांत्रिक, समान और सार्वभौमिक बनाने का प्रयास किया। अंततः 2020 में प्रस्तुत राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) ने शिक्षा को भारतीयता, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालने का प्रयास किया।

भोध पत्र के प्रश्न

किसी भी शोध की दिशा और परिधि निर्धारित करने में अनुसंधान प्रश्नों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्तीय शिक्षा सिद्धांतों के आलोक में समालोचनात्मक विवेचन करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु निम्नलिखित अनुसंधान प्रश्न तैयार किए गए हैं।

3 विवेकानन्दीय दृष्टिकोण से शिक्षा नीति 2020 के कौन-से पहलू समालोचना योग्य हैं?

4 स्वामी विवेकानन्द के अनुसार भारतीय शिक्षा नीति में नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा के लिए क्या प्रावधान किए गए हैं?

भोध पत्र के उद्देश्य

1 विवेकानन्द के भौक्षिक दर्शन से शिक्षा नीति 2020 का समालोचनात्मक विश्लेषण करना।

2 स्वामी विवेकानन्द के अनुसार भारतीय शिक्षा नीति को नैतिक एवं मूल्यपरक बनाने हेतु सुझाव देना।

पूर्ववर्ती अध्ययनों की समीक्षा

Biswas Subhasish (2022). Thoughts and Ideas of Swami Vivekananda on Education — A Brief Study: Biswas का लेख विवेकानन्द के शैक्षिक सिद्धान्तों की स्पष्ट व्याख्या करता है। इसमें शिक्षा को “चरित्र निर्माण” और “सच्चे मानव का विकास” कहा गया है। लेखक ने विवेकानन्द के लेखों और भाषणों से उदाहरण लेकर उनके विचारों को चार स्तंभों—आत्म-प्रेरणा, नैतिकता, व्यवहारिकता, और सामाजिक सेवाकर्म—में वर्गीकृत किया। अध्ययन में गुणात्मक समीक्षा पद्धति अपनाई गई है। निष्कर्षतः यह पाया गया कि यदि आधुनिक शिक्षा विवेकानन्द के इन सिद्धांतों को अपनाए, तो विद्यार्थियों में स्वावलंबन और आत्म-संयम विकसित होगा। अध्ययन की सीमा यह है कि यह केवल दार्शनिक व्याख्या तक सीमित है, व्यावहारिक उदाहरणों या नीति-प्रभाव का विश्लेषण नहीं है। आपके शोध में यह अध्ययन मूल्य शिक्षा और जीवन कौशल खंड के लिए सशक्त सैद्धान्तिक आधार प्रदान करता है।

Jabeen. M- (2024). Educational Philosophy of Swami Vivekananda ICiSET Proceedings Jabeen का शोध विवेकानन्द के शिक्षा-दर्शन को शिक्षक प्रशिक्षण के परिप्रेक्ष्य से विश्लेषित करता है। लेखक ने गुणात्मक पद्धति का उपयोग किया और बताया कि शिक्षक केवल ज्ञान-वितरक नहीं, बल्कि प्रेरणा-स्रोत होना चाहिए। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि शिक्षक-शिक्षण में मूल्याधारित और अनुभवात्मक शिक्षण को अपनाना आवश्यक है। लेख की विशेषता है कि यह NEP 2020 के शिक्षकीय दृष्टिकोण से मेल खाता है। सीमा यह है कि लेख किसी प्रशिक्षण-कार्यक्रम के अनुभवजन्य डेटा से समर्थित नहीं है। फिर भी यह शोध आपके अध्ययन में teacher education reforms के लिए महत्वपूर्ण सैद्धान्तिक आधार बनेगा।

Bhat. S- A- (2021). An Evaluative Study of Educational Philosophy of Swami Vivekananda: यह अध्ययन विवेकानन्द के सिद्धान्तों का मूल्यांकनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। लेखक ने विवेकानन्द के ग्रंथों और समकालीन भारतीय शिक्षा नीतियों का तुलनात्मक अध्ययन किया। निष्कर्ष निकला कि विवेकानन्द की “उद-उपादह” शिक्षा आज के युवाओं में आत्म-संवर्धन और सामाजिक उत्तरदायित्व दोनों को विकसित कर सकती है। लेख में विवेकानन्द के विचारों को NEP 2020 के समग्र विकास लक्ष्यों से जोड़ा गया है। अध्ययन की सीमा यह है कि यह सैद्धान्तिक है और सांख्यिकीय प्रमाणों का अभाव है। आपके शोध के लिए यह अध्ययन “शिक्षा में मानव-केन्द्रितता” को स्पष्ट करता है।

निष्कर्ष, भारतीय शिक्षा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य स्पष्ट करता है कि युगों-युगों से शिक्षा का मूल लक्ष्य “मनुष्य और समाज का समग्र विकास” रहा है। आज जब शिक्षा में तकनीकी और वैश्विक दृष्टिकोण हावी हो रहा है, तब विवेकानन्दीय शिक्षा दर्शन और एनईपी 2020 का समालोचनात्मक अध्ययन और भी प्रासंगिक हो जाता है। प्राचीन काल से वर्तमान तक विषय का विकास भारतीय शिक्षा परंपरा का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है और इसमें विभिन्न युगों के

अनुसार शिक्षा का स्वरूप, उद्देश्य और पद्धतियाँ निरंतर परिवर्तित होती रही हैं। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक शिक्षा ने समाज और व्यक्ति दोनों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्राचीन कालीन शिक्षा प्राचीन भारत की शिक्षा गुरुकुल प्रणाली पर आधारित थी। इसमें शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, आत्मज्ञान और समाज सेवा था। वेद, उपनिषद और धर्मशास्त्र शिक्षा के मुख्य आधार थे। इस काल में शिक्षा को “सर्वांगीण विकास” का साधन माना गया। विद्यार्थियों को वेद-अध्ययन, व्याकरण, गणित, आयुर्वेद, ज्योतिष, दर्शन और युद्ध कला की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा निःशुल्क होती थी और गुरु-शिष्य संबंध अत्यंत पवित्र माने जाते थे। इस समय शिक्षा का मूल लक्ष्य “सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्” की प्राप्ति और आत्मा का उत्थान था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- 1 सैडलर, एम (2010) तुलनात्मक शिक्षा शैक्षिक कारकों और परंपराओं का अध्ययन लंदन रूटलेज-
- 2 सैडलर, एम (2010) तुलनात्मक शिक्षा शैक्षिक कारकों और परंपराओं का अध्ययन लंदन रूटलेज
- 3 शर्मा, आर (2015) भारत में शिक्षा का दार्शनिक आधार नई दिल्ली अटलांटिक पब्लिशर्स
- 4 तनेजा, वी.आर (2019) शैक्षिक विचार और व्यवहार नई दिल्ली स्टर्लिंग पब्लिशर्स
- 5 तनेजा, वी.आर (2019) शैक्षिक विचार और अभ्यास नई दिल्ली स्टर्लिंग पब्लिशर्स
- 6 यूएनडीपी (2020) मानव विकास रिपोर्ट 2020 संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम-
- 7 यूनेस्को (2016) शिक्षा 2030 इंचियोन घोषणा और कार्य योजना- पेरिस यूनेस्को
- 8 विवेकानंद एस- (2017) स्वामी विवेकानंद के संपूर्ण कार्य (खंड 1-9) अद्वैत आश्रम
- 9 सरमा, एस. (2023) रवींद्रनाथ टैगोर की एजुकेशनल फिलॉसफी: आज की दुनिया में इसकी अहमियत की एक स्टडी। शोधज्ञान-NU: जर्नल ऑफ़ लिटरेचर एंड कल्चर स्टडीज़, 1(1), 46-57.
- 10 वर्मा, आर. (2025). भारतीय फिलॉसफी की परंपराओं में मेडिटेशन और माइंडफुलनेस। शोधसामाजिक: जर्नल ऑफ़ सोशल स्टडीज़ 2(1), 1-7.
<https://doi.org/10.29121/ShodhSamajik.v2.i1.2025.10>